INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION

82

Impact Factor - 6.261

ISSN - 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

# RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-research Journal

PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

February-2019 Special Issue -2

## इक्कीसवीं सदी का हिंदी साहित्य : संवेदना के स्वर

Guest Editor:
Dr.Prakash K. Koparde
Dr. V.V.Arya
Dept.Of Hindi,
Vaidhnath College, Parli-Vaijnath, Dist. Beed

Chief Editor -
Dr. Dhanraj T. Dhangar,
Assist. Prof. (Marathi),
MGV'S Arts & Commerce College,
Yeola, Dist - Nashik [M.S.] INDIA

SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS
For Details Visit To : www.researchjourney.net

© All rights reserved with the authors & publisher Price : Rs. 800/-

RESEARCH JOURNEY

This Journal is indexed in :
- University Grants Commission (UGC)
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmoc Impact Factor (CIF)
- Global Impact Factor (GIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (SJIF) - 6.261, (CIF) - 3.452(2015), (GIF)-0.676 (2013)
Special Issue -2- इक्कीसवीं सदी का हिंदी साहित्य : संवेदना के स्वर
ISSN : 2348-7143
February-2019

## INDEX



| o. | Title of the Paper | Author's Name | Page No. |
|---|---|---|---|
| 1 | रेत उपन्यास में देह–व्यापार नारी विमर्श..... | –डॉ. जिजाबराव विश्वासराव पाटील | 05 |
| 2 | दलित कविता : संघर्ष की गाथा | - प्रा.डॉ. न.पु. काळे | 08 |
| 3 | ओमप्रकाश वाल्मीकि के कहानी संग्रह 'सलाम' में दलित चेतना | - प्रा.डॉ.विष्णु जी.राठोड | 11 |
| 4 | हिंदी साहित्य में दलित चेतना | - प्रा. चौधरी शफिक लतिफ | 13 |
| 5 | उदय प्रकाश की कविता में राजनैतिक संवेदना ( 'एक ------- | - प्रा. डॉ. गजानन सवने | 15 |
| 6 | मैत्रेयी पुष्पा के कथा–साहित्य में स्त्री..... | -डॉ. तुपे प्रविण तुळशीराम | 17 |
| 7 | 'रजत रानी 'मीनू' की कहानियों में चित्रित... | –डॉ.हनुमंत दत्तु शेवाळे | 20 |
| 8 | नारी-विमर्श और साहित्य | - डॉ.शेखर घुंगरवार | 24 |
| 9 | एक्कीसवी सदी की दलित कविता में अस्मिता और प्रतिशोध | - प्रा.डॉ.भारत बा.उपाध्य | 26 |
| 10 | 'तिरस्कृत' आत्मकथा में दलित चेतना | - डॉ. कोटुळे बायजा | 29 |
| 11 | भूमंडलीय अपसंस्कृति और 21 वीं शती की हिंदी कविता | – डॉ. अशोक मरळे | 32 |
| 12 | उदय प्रकाश कविता में सामाजिक संवेदना..... | – प्रा. डॉ. प्रकाश खुळे | 36 |
| 13 | "समकालीन आदिवासी कहानियां और संजीव" | –डा. संतोश रायबोले | 39 |
| 14 | 21 वीं सदी का आत्मकथा साहित्य–..... | – डॉ.गोविंद गुंडप्पा शिवशेट्टे | 42 |
| 15 | यमदीप : किन्नरों.. कारामुंगीकर बालाजी गोविंदराव | – डॉ. पी. डी. चिलगर | 45 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 16 | सुशीला टाकभौरे की कविताओं में 'स्त्री-विमर्श' | प्रा. शिवाजी रामजी राठोड – गावीत राकेश राजु | 48 |
| 17 | निम्नवर्गीय स्त्री जीवन की संघर्ष गाथा : रुदाली | - प्रा.रामहरी काकडे | 50 |
| 18 | इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानियों में नारी का..... | –डॉ. पुष्पलता अग्रवाल | 52 |
| 19 | 'नारी संवेदना के विविध स्वर'(स्त्री आत्मकथ... | – डॉ. अलका नारायण गडकरी | 55 |
| 20 | 'क्याप' और 'नीलधारा' उपन्यास में चित्रित --- | _ ज़ेनब खान | 58 |
| 21 | गिलिगडु उपन्यास में अभिव्यक्त समस्याओं.... | – सावते प्रकाश नवनितराव | 61 |
| 22 | इक्कीसवीं सदी की हिंदी कहानियों में स्त्री ----- | _ बनजा तालदी | 63 |
| 23 | उपेक्षीत वर्ग 'तृतीय पंथी' और डॉ. ... | –.प्रा.सोनकाम्बले पद्मानंद पिराजीराव | 66 |
| 24 | नयी सदी की हिन्दी ग़ज़ल में गजनीतिक चेतना | - डॉ. मृणाल शिवाजीराव गोरे | 68 |
| 25 | दोहरा अभिशाप दलित आत्मकथा में स्त्री---- | _ डॉ.खंदारे चंदू | 72 |
| 26 | इक्कीसवीं सदी की कविता | –डॉ.राम सदाशिव वडे | 74 |
| 27 | पोस्ट बॉक्स नं.203 नाला सोपारा : किन्नर..... | –डॉ. रमेश संभाजी कुरे | 76 |
| 28 | उदय प्रकाष की कविता में वर्ग–संघर्ष | – डॉ. के. बी. गंगणे | 79 |
| 29 | इक्कीसवीं सदी के कहानियों में सामाजिक.... | – डॉ. ख़ाज़ी एम. के. | 81 |
| 30 | सुषीला टाकभौरे की कविता में संवेदना... | –कु. सरवदे संगिता तुकाराम | 84 |
| 31 | इक्कीसवीं सदी की हिन्दी कविता में..... | – प्रा.डॉ.चित्रा धामणे | 87 |
| 32 | समकालीन कविताओं में स्त्री जीवन का यथार्थ | _ सिराज | 89 |
| 33 | ''कथा साहित्य में चित्रित स्त्री विमर्श'' | – योगेश राणुजी कोरटकर | 93 |
| 34 | प्रभा खेतान के कथा–साहित्य में नारी विमर्श | – कु. मनशेट्टी लक्ष्मी | 95 |
| 35 | ''चंद्रकांत देवताले का 'पत्थर फेंक रहा हुँ' कविता .... | –सुधाकर दगडू वाघमारे | 98 |
| 36 | ''मृदुला सिन्हा के साहित्य में सामाजिक पक्ष एवं ..... | –जोशी अश्विनी भुजंग | 101 |
| 37 | 21 वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में मुस्लिम नारी | -अफ़रोसे सुल्ताना | 104 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 38 | अस्मिता की तलाश करती अनन्या–प्रभा खेता | –शेंडगे सुलभा वाघंबर | 107 |
| 39 | हिन्दी कहानियाँ और किन्नर विमर्श | –डॉ. काकानि श्रीकृष्ण | 110 |
| 40 | वाजारवादी अभिव्यक्ति की प्रस्तुति : इक्कीसवीं ..... | –डॉ. हाशमवेग मिर्झा | 113 |
| 41 | समकालीन महिला कथाकारों के साहित्य में स्त्री चेतना | – डाने कायी | 115 |
| 42 | इक्कीसवीं सदी के प्रथम दशक के उपन्यासों में ... | – प्रा. डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर | 118 |
| 43 | इक्कीसवीं सदी की कविता के संवेदना स्वर ... | – डॉ. पल्लवी भुदेव पाटील | 121 |
| 44 | इक्कीसवीं सदी की कविता में मानवीय संवेदना | - डॉ. एस. जे. पवार | 123 |
| 45 | अशोक वाजपेयी के काव्य में व्यक्त संवेदना | – प्रा.डॉ. सुजितसिंह शि. परिहार | 126 |
| 46 | समकालीन हिंदी दलित कविता और नारी | - उमा देवी | 129 |
| 47 | अमरकांत की कहानियों में स्त्री विमर्श | –डॉ के. सोनिया | 134 |
| 48 | इक्कीसवीं सदी के चुनी हुई महिला कथाकारों के साहित्य में नारी–विमर्श | प्रा. लेफ्टनंट डी. एस. चिट्टमपल्ले | 141 |
| 49 | 'बेरोजगार' उच्चशिक्षितों की व्यथा का दस्तावेज़ | – प्रा.डॉ.बाबूगिरी महंतगिरी गिरी | 144 |
| 50 | इक्कीसवीं सदी की कविताओं में नारी की स्थिति | – डॉ.प्रवीण देशमुख | 146 |
| 51 | हाशिये का समाज : आदिवासी उपन्यासों के संदर्भ में | - नागापुरे संतोष | 150 |


*Our Editors have reviewed paper with experts' committee, and they have checked the papers on their level best to stop furtive literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher.*

***- Chief & Executive Editor***

# इक्कीसवीं सदी की कविता के संवेदना स्वर
## (विशेष 'जिद' के संदर्भ में)

डॉ. पल्लवी भुदेव पाटील.
हिंदी विभाग प्रमुख
राजर्षि शाहू महाविद्यालय (स्वायत्त), लातूर

==========================================================

मानवी व्यवहार में यदि सबसे महत्वपूर्ण सिक्का कोई है तो वह है 'शब्द' और शब्द से तैयार होनेवाली भाषा। इसके बिना समग्र मानवी व्यापार डगमगा जाता है। प्रकृति ने ही मनुष्य को एक प्राकृतिक तत्व दिया है अभिव्याक्ति का। भारत में शब्द के बारे में दार्शनिक, भाषा वैज्ञानिक व्याकरणिक सभी दृष्टि से विचार भी हुआ है। संस्कृत वैयाकरणों के अनुसार शब्द मनुष्य के अंतर में प्रतिष्ठित होता है और विविक्षा के होने पर वर्णात्मक ध्वनियां के रूप में व्यक्त होता है। शब्द के आंतरिक पक्ष को स्फोट और बाह्य पक्ष को ध्वनि भी कहा गया है। कविता में सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण होते है ''शब्द'' कविता में प्रयोग किए गए शब्द अर्थ के अधिक निकट होते है, ''कुंतक कहते हैं— किसी अर्थ का वाचक एक ही शब्द को होता है।''[1] संस्कृत आचार्योंने शब्द को साध्य नहीं माना है। प्रश्न यह भी है कि किसी कविता में आनेवाला शब्द महज सामान्य शब्द है। यदि ऐसा होता तो कई लोग रामप्रसाद बिस्मिल कि लिखी ''सरफरोशी कि तमन्ना अब हमारे दिल हमें है'' यह कविता पढ़ते हुए फाँसी पर झूल गए इनके लिए सरफरोशी का अर्थ नही था क्या जो आपके और मेरे जैसे पाठ के लिए आज है। ''हेलेन केलर के सामान्य जीवन में एक अविस्मरणीय दिन आया उसने 'शब्द' को पाया।''[2] शब्द के सृष्टि की कुंजी है सृष्टि के हर पूर्जे का एक नाम है और हर नाम एक विचार को जन्म देता है। ईरान के शाह महल में नौकरों चाकरों के लिए केवल इशारों की भाषा का इस्तेमाल की इजाजत थी। वे शब्द का प्रयोग तभी कर सकते थे जब अपने बराबर वालों से बात कर रहे हो। वे लोग अभाग होते है जो वाणी की स्वतंत्रता से वंचित होते है। संसार में बहुत से ऐसे जीव है जिनके पास मनुष्य से अधिक शक्ति है लेकिन मनुष्य के पास जो वाक् शक्ति है वह किसी के पास नहीं है। बकौत सार्त्र एक आदमी पीड़ा में चीखता है और दूसरा पीड़ा में गाता है। जो पीड़ा में गाता है वही रचनाकार है। इसीलिए रचना एक सृजन हैं—कोई अदालती बयान या अखबारी विवरण नहीं। ''मुक्तिबोध की कविता में इतनी भयावह वास्तविकता है कि वें फैटंसी में जाते हुए नजर आते हैं।''[3] ''किटस ने तो यहाँ तक कह दिया ेिज जीम पउंहपदंजपवद ेमप्रमे े इमंनजल उनेज इम जतनजी ेमजीमत पज मगपेजमक इमवितम वत दवज''[4] करस भी सत्य पर ही जोर देते नजर आते हैं। बाणभट्ट की आत्मकथा में भट्टिनी बाणभट्ट से कहती है, तुम आर्यवर्त के द्वितीय कालिदास ही तुम्हारे मुख से निर्मल वाग्धारा झरती है तुम्हारे मुख में सरस्वती का निवास है। तुम इस म्लेच्छ कही जानेवाली निर्दय जाती के हृदय में समवेदना का संचार कर सकते हो, उन्हें स्त्रियों का सम्मान करना सिखा सकते हो, बालकों से प्यार करना सिखा सकते हो। यह प्रेम और करूणा कविता के शाश्वत मुल्य है। आज २१ वी शती की बात की जाए तो वैज्ञानिक—यांत्रिक युग ने मनुष्य को प्रकृति से दूर कर दिया है। मनुष्य की भाषा में प्रकृति अब केवल उपभोग्य है। राजेश जोशी की कविता में मनुष्य की संवेदनाओं का विस्तार होना है और यही कविता का मूल उद्देश है कि मनुष्य और थोडा मनुष्य बन जाता है। राजेश ने बहुत सोच समझकर इस कविता संग्रह को ''जिद'' यह नाम दिया है। राजेशजी कि जिद है मनुष्य को और थोडा मनुष्य बनाने की। राजेशजी कहते है—

'' सलिम अली की किताब पढ़ते हुए
मैंने परिदों को पहचानना सीखा
और उनका पीछा करने लगा
पाँव में जंजीर न होती तो अब तक तो
न जाने कहाँ का कहाँ निकल गया होता
सकता था पीछा करते—करते

मेरे पंख उग आते
और मैं उड़ना भी सीख जाता।''[५]

प्रस्तुत पक्तियों में पाँव में जंजीर जो आज के मनुष्य की यांत्रिकता के बिच फँसी उत्तरदायित्व को बताती है। और अचानक कवि फंतासी की भी बात करता है। घर–गृहस्थी के तंगदस्त पछडों से सामान्य मनुष्य कैसे निकले। हर कोई गाडगेबाबा, बाबा आमटे, डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम तो नहीं बन सकता। किंतु अगर हम लगातार कोशिश करते रहे तो हम पारीवारिक उत्तरदायित्व जैसे निभाते हैं वैसेही सामाजिक उत्तरदायित्व निभा सकते हैं।

गजेशजी कहते हैं–

''बड़े शहरों की बनावट अब लगभग ऐसी ही हो गई है।
जिनमें सड़कें है या दुकानें ही दुकानें है।
लेकिन दूर–दूर तक उनमें सिर छिपाने की जगह नहीं
शक करने की आदत इतनी बढ़ चुकी है कि
तुम्हे भीगता हुआ देखकर भी
कोई अपने ओसरे से सिर निकालकर आवाज नहीं देता
कि आओ यहाँ सिर छिपा लो और
बारिश रूकने तक इंतजार कर लो
घने पेड भी दूर–दूर तक नहीं कि कोई कुछ देर ही सही
उनके नीचे खड़े होकर बचने का भरम पाल सके
इन शहरों के वास्तुशिल्पियों ने सोचा नहीं होगा कभी
कि कुछ पैदल चलते लोग भी इन रास्तों से गुज़रेंगे
एक पल को भी उन्हें नहीं आया होगा ख्याल
सब को पता है कि बरसात कई बार अचानक ही आ जाती है
सब के साथ कभी न कभी हो चुका होता है ऐसा वाकया
लेकिन इसके बाद भी,
हम हमेशा छाता लेकर तो नहीं निकलते''[६]

भारत की नदियों की स्थिति भी कुछ ऐसी ही हो गई है। कवि के मन में नदी के रास्ते प्रति ओढ़ है। नदियों की समस्या हमारी दौर की त्रासदी है। लुप्त होती नदि पर कवि ने संवेदना व्यक्त की है। इसमें कोई साशंकता नही कि राजेश जोशी की कविताओं २१ वी शति की संवेदना का स्वर दिखाई देता है। यह संवेदना इस हद तक हैकिजब राजेश जोशी की 'जिद' काव्यसंग्रह हाथ में लिया तो एक दिन में उसे पढ़ ढाला। मानवीय मूल्य, नैतिकता की पक्षधर कविता समाज, व्यवस्था की वास्तविकता से रूबरू करवाती है। उसके प्रति आक्रोश उत्पन्न करती है। फिर वह पानी की समस्या हो किसान के आत्महत्या की हमारे लोकतंत्र की। यही तो २१ वीं शती की संवेदना का स्वर है।

**संदर्भ सूची :**

१) एक साहित्यिक की डायरी – ग.मा. मुक्तिबोध।
२) स्टोरी ऑफ माय लाईफ, हेलन केअर, पृ. सं. ३९
३) कविता क्या है – विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, पृष्ठ क्र. २४.
४) शैली विज्ञान और आलोचना की नयी भूमिका – रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, पृष्ठ क्र. ३९–४६.
५) दे. नवलकिशोर : मानववाद और साहित्य, पृ. क्र. १०८
६) जिद् – राजेश जोशी, पृष्ठ क्र. २४, ३९, ४९, ५४–५५, ८२, ११६